SHRI MANUBHAI SHAH: It is too early to say anything. Once the tmcks are manufactured, we shall be in a position to know the cost thereof.

Oral Answers

DR. H. N. KUNZRU: Was this project approved of by the Ministry of Commerce and Industry?

SHRI MANUBHAI SHAH: Yes, Sir, the Government of India as a whole took the decision, including the Ministry of Commerce and Industry.

DR. H. N. KUNZRU: The hon. Minister has not answered my question. It is the Commerce Ministry that is primarily concerned with the manufacture of articles. Has that Ministry approved of it? The Government of India may have overruled it.

SHRI MANUBHAI SHAH: I am saying that the Ministry approved of it. That is how the Government took the decision.

SHRI V. PRASAD RAO: Is it not a fact that the benefit to the nation would have been more if this manufacture had been taken up in the public sector rather than in the private sector?

SHRI MANUBHAI SHAH: Well, Sir, the Defence Ministry wanted to manufacture these trucks to meet army requirements and the Government of India approved of this scheme in the public sector.

## PRICES OF INDIGENOUS CYCLE TYRES AND **TUBES**

- \*347. MOULANA M. FARUOI: Will the Minister of COMMERCE AND INDUSTRY be pleased to state:
- (a) whether it is a fact that the prices of the various qualities of indi genous cycle tyres and tubes have been fixed by Government; and
- (b) if so, what measures have been taken or are proposed to be taken to ensure that these are available to the general consumers at controlled rates?

THE MINISTER OF INDUSTRY (SHRI MANUBHAI SHAH): (a) and (b) A statement is laid on the Table of the House.

## STATEMENT

- (a) In October, 1955, the manufacturers were asked to fix the price of cycle tyres and tubes, on the basis of the recommendations made by the Tariff Commission.
- (b) The following measures have been taken by Government to ensure fair prices to general consumers:-
  - (1) The production of bicycle tyres and tubes have been stepped up.
  - (2) When there was a shortage of bicycle tyres and tubes in the country, sufficient quantity was imported to augment indigenous production to the desired extent.
  - (3) Even now provision has been made for granting permission to import any specified banned sizes of tyres and tubes on an ad hoc basis.
  - (4) Government have been taking up the matter of ensuring supplies of tyres and tubes at fair prices with the manufacturers from time to time. The manufacturers are endeavouring to see that the bicycle tyres and tubes are sold at fair prices by their dealers distributors.

مولابا أيم - فاروقى : أستيملت کے پارت ہی کے سلسلہ میں جو آسم ہ میں آ**پ** نے کہا ھے اس میں یہ فرماتے هیں که بالسکل کے کی شارتیم ہے - تو کیا آپ یہ بتائیلگے که سنه ۵۹-۱۹۵۸ میں کتنے تائر امہورت کرنے کی آپ نے اجازت دی -

‡िमौलाना एम**ः फारूकी** : स्टेटमेंट के पार्ट की के सिलसिले में जो नम्बर २ में ग्रापने कहा है, उसनें भ्राप यह फरमाते हैं कि बाइसिफिल के टायर की शार्टेज है, तो क्या आप यह बतायेंगे कि १६५ द,५६ में कितने टायर इम्पोर्ट करने की ग्रापने इजाजत दी? ]

भी मनुभाई शाहः दरम्रसल बात यह है कि जो हमारे सैकेंड फाइव ईयर प्लान के एंड को टागट था उस से भी ज्यादा गत साल का प्रोडक्शन हो चुका है। इसलिए एक तरीके से साइकिल के टायर और ट्यूब का प्रोडक्शन ज्यादा से ज्यादा हुआ है। फिर भी कोई ऐसी बैराइटी है जिसको इम्मोर्ट करना पड़ता है। बहुत योड़े टायर जो कि हम मंगाते हैं, वे उसी किस्म के हैं जो सभी यहां बनते नहीं हैं।

مولانا ايم - فاروقى : كها أنويبل منستر بتانیں کے که جو تدبیریں آپ نے قیمتیں قامس کرنے کی نکالی ھیں ان کے باوجود بازار میں ٹائر زیادہ قیمتوں پر بک رہے ھیں -

**\_\_\_\_\_मौलाना एम० फारूकी :** नया भ्रानरेबिल मिनिस्टर बतायेंगे कि जो तदबीरें श्रापने कीमतें फिक्स करने की निकाली हैं, उनके बावजद बाजार में टायर ज्यादा कीमतों पर विक रहे हैं ? ]

श्री मनभाई शाह : यह तो मैंने बताया कि ऐसी कोई खास शिकायत हमारे पास नहीं ग्राई है। यह ज़रूर है कि कई एक कुंज्यमर किसी खास कम्पनी के टायर को चाहते हैं भीर वह टायर मिलने में दिक्कत होती है। लेकिन दो तीन फैक्ट्रियों की शिकायत है कि उनके पास थोड़ा स्टाक बढ़ गया है।

مولانا ایم - فاروقی: سال بهر پهلے بھی میں نے یہ سوال آپ کی خدمت میں پیش کیا تھا اور بازار میں اگر كوئى لےمين جائے تو اسے اندازہ هو جائيمًا که جس تاثر کی تیست ۳ روپیه ۸ آئے ہے وہ ۷ روپیتہ ۸ آنے پر بک رہا ھے اور لوگوں کو کافی داقت ھے -

to Questions

**‡मौलाना एम० फ.स्की** : साल भर पहले भी भैंने यह सवाल आपकी लिदमत में पेश किया था और बाजार में अगर कोई ले मैन जाय तो उसे अन्दाजा हो जायगा कि जिस टायर की कीमत ४ रुपये = आने हैं वह ७ रुपपे प ग्राने पर बिक रहा है भीर लोगों को काफी दिक्कत है।

श्री मनु गाई शाह : ऐसी कोई शिकायत मानतीय सदस्यों बतायें तो उसके बारे में हम मालूम करेंगे, लेकिन एक ही कम्पनी के टायर सब लोग चाहें तो कैते मिल सकते हैं बेसे हम इंडिजनस कैं। सिटी बढ़ाना चाहते हैं और यह कोशिश कर रहे हैं कि सब तरह के टायर इस मल्क में बनें।

DR. SHRIMATI SEETA PARMA-NAND: Is Government aware that only some of the licensed dealers are selling them at controlled prices which they say is about Rs. 6, but any number of tyres are available in the mofussil towns at higher rates, higher than even Rs. 7?

SHRI MANUBHAI SHAH: That is precisely the question which I answered. The production of tyres has far exceeded the Second Five Year Plan target, that is, even the target set for 1960-61. We have licensed a capacity twice that number, that is about 36 million tyres instead of 18 million tyres and production today is even more than this figure but there is selective preference for particular variety which may be in short supply. If the hon. Member has come across any complaint and if she forwards that to us, we shall try to look into the matter.

t[] Hindi transliteration.

1925

SHRI H. D. RAJAH: Consequent on the over-production of tyres, has price become cheaper so far as the consumer is concerned?

SHRI MANUBHAI SHAH: That is what I have already said. In 1954, the price of a certain type was Rs. 5-4-0 but the current price is about Rs. 4-10 but this does not cover all varieties. There are hundreds of varieties. This is only an illustration.

## PRODUCTION AND CONSUMPTION OF PAPER

\*348. MOULANA M. FARUQI: Will the Minister of COMMERCE AND INDUSTRY be pleased to state the estimated annual production and consumption of paper in the country?

THE MINISTER OF INDUSTRY (SHRI MANUBHAI SHAH): Production and consumption of paper and paper boards excluding newsprint during he year 1958 were about 251,000 tons and 265,000 tons respectively.

مولانا ایم - فاروقی : کیا آنریبل مفستر یه بتائیں گے که اس میں کس-کس قسم کے پیپر کتابے بی رہے ھیں -

‡[मौलाना एम० फारूकी : क्या आन-रेबिल मिनिस्टर यह बतायेंगे कि इस में किस-किस किस्म के पेपर कितने बन रहे हैं ?]

श्री मनुभाई शाह : इसकी फेहरिस्त बहुत लम्बी है। वह सब मैं बता सकता हूं। इसमें व्हाइट प्रिटिंग पेपर है सवा दो लाख टन। रैपिंग पेपर हैं १५ हजार टन। इन सब को एक लम्बी फेहरिस्त है।

مولانا ایم - فاروقی : میں دوسری بات اس سلسله میں عرض کرتا هوں اور ولا هے نیوز پرنت پیپر کی - آنریبل منستز کو یه اطلاع هے که اس

وقت نیوز پرنت پیپر کی بہت زیادہ تیمت ھے - تو اس کے لئے کیا تنجویز کی جا رھی ھے -

‡[मौलाना एम० फारूकी: मैं दूसरी बात इस सिलसिले में अर्ज करता हूं वह है न्यूज प्रिट पेपर की। स्नानरेबिल मिनिस्टर को यह इत्तिला है कि इस वक्त इस न्यूज प्रिट पेपर की बहुत ज्यादा कीमत है। तो उसके लिए क्या तजवीज की जा रही है?]

श्री मनुभाई शाह: जहां तक यह सवाल है, इसमें न्यूज जिट नहीं श्राता। लेकिन फिर भी श्रानरेबिल मेम्बर ने जब यह पूछा है श्रीर वाकई यह सवाल श्रहमियत रखता है, तो मैं उनकी सूचना के लिए यह बताऊंगा कि हम नेपा में प्रोडक्शन बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। इसके श्रलाबा २ फैक्ट्रियां न्यूज जिट की पब्लिक सेक्टर में लगाई जांय, इसकी भी तजवीज चालू है।

مولانا ایم - فاروقی: آپ کی اینول
رپورت میں یه تذکره هے که اس وقت
ایک هی نیپا مل هے اور اس میں نیوز
پونٹ بن رها هے - اب آپ ایک اور
فیکٹری بنانے والے هیں اور اس کے
سلسلہ میں آپ تسکشن کو رهے هیں تو کیا آنریبل منسٹو یه بدئیں کے
که کب تک وہ تسکشن ختم هونے کی
امید ه -

"[मौलाना एम० फारूकी: यह आपकी एन्अल रिपोर्ट में तजिकरा है कि इस वक्त एक ही नेपा मिल है और उसी में न्यूज जिट बन रहा है। अब आप एक और फिल्ट्री बनाने वाले हैं और उसके सिलसिले में आप डिस्कशन कर रहे हैं। तो क्या आनरेबिल मिनिस्टर यह बतायेंगे कि कब तक वह डिस्कशन खत्म होने की उम्मीद है?]